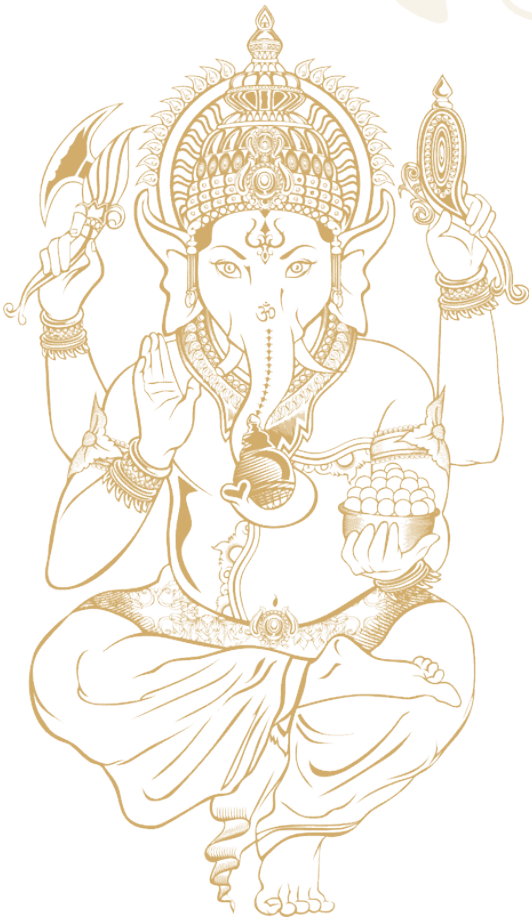

Aman kumar

18 Sep 1999

07:05 AM

Jamshedpur

Model: Web-MyKundli

Order No: 119080801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**18/09/1999**
दिन	शनिवार
जन्म समय	**07:05:00 घंटे**
इष्ट	03:50:59 घटी
स्थान	**Jamshedpur**
राज्य	Jharkhand
देश	India

अक्षांश	22:47:00 उत्तर
रेखांश	86:12:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:14:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	07:19:48 घंटे
वेलान्तर	00:05:37 घंटे
साम्पातिक काल	07:05:57 घंटे
सूर्योदय	05:32:36 घंटे
सूर्यास्त	17:46:07 घंटे
दिनमान	12:13:31 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	शरद
सूर्य के अंश	00:51:39 कन्या
लग्न के अंश	21:19:07 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कन्या - बुध
राशि-स्वामी	**धनु - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**मूल - 2**
नक्षत्र स्वामी	केतु
योग	आयुष्मान
करण	बव
गण	राक्षस
योनि	श्वान
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	मृग
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	यो-योगेश
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कन्या

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1921	भाद्रपद	27
पंजाबी	संवत : 2056	आश्विन	2
बंगाली	सन् : 1406	आश्विन	1
तमिल	संवत : 2056	पुरुटासी	2
केरल	कोल्लम : 1175	कन्नी	2
नेपाली	संवत : 2056	आश्विन	2
चैत्रादि	संवत : 2056	भाद्रपद	शुक्ल 8
कार्तिकादि	संवत : 2056	भाद्रपद	शुक्ल 8

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 8
तिथि समाप्ति काल _____: 14:47:08
जन्म तिथि _____: 8
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: मूल
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 27:09:20 घंटे
जन्म योग _____: मूल
सूर्योदय कालीन योग ____: आयुष्मान
योग समाप्ति काल _____: 17:51:30 घंटे
जन्म योग _____: आयुष्मान
सूर्योदय कालीन करण ____: बव
करण समाप्ति काल _____: 14:47:08 घंटे
जन्म करण _____: बव
भयात _____: 16:56:35
भभोग _____: 67:07:25
भोग्य दशा काल _____: केतु 5 वर्ष 2 मा 26 दि

घात चक्र

मास _____: श्रावण
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: भरणी
योग _____: वज्र
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: धनु
सूर्य _____: तुला
चन्द्र _____: मीन
मंगल _____: वृश्चिक
बुध _____: सिंह
गुरु _____: धनु
शुक्र _____: कुम्भ
शनि _____: कन्या
राहु _____: कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

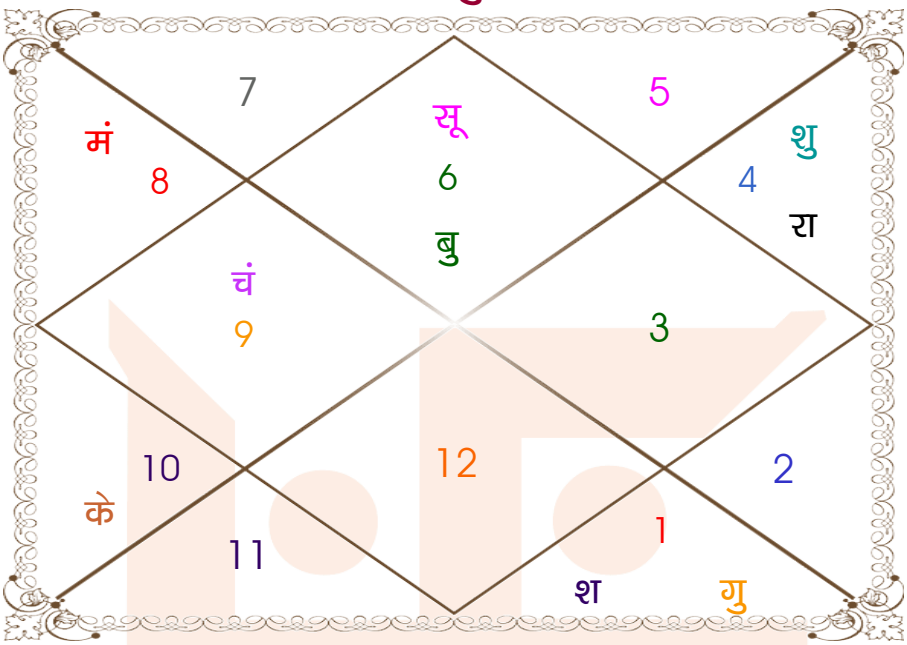

चन्द्र कुंडली

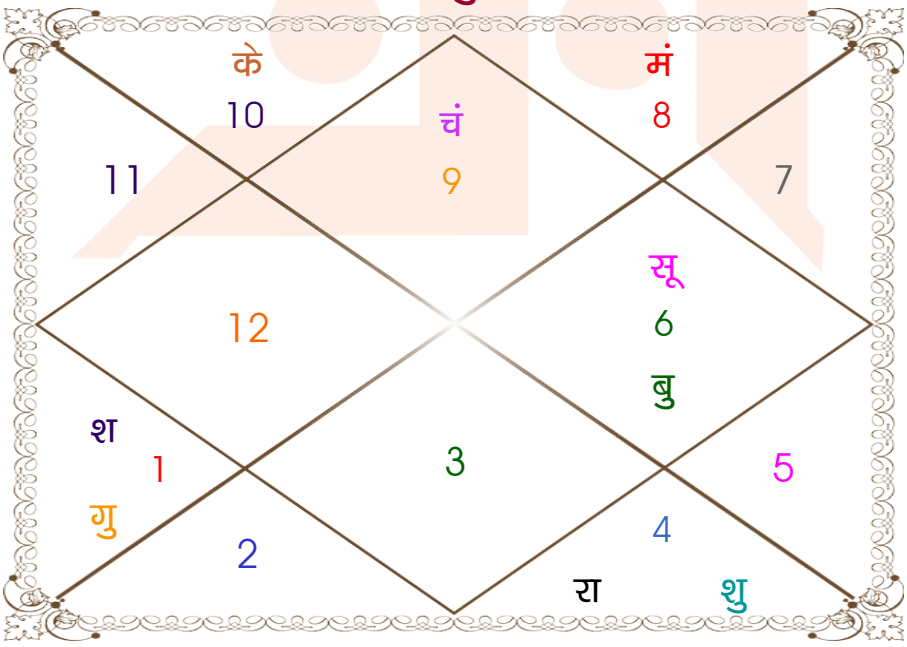

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

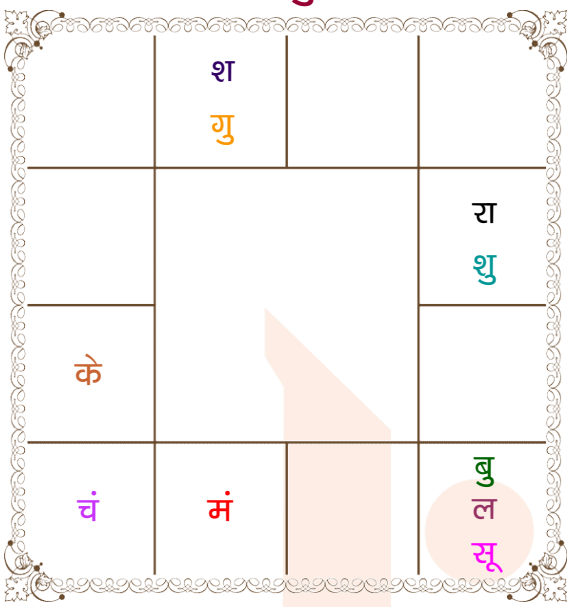

लग्न कुंडली

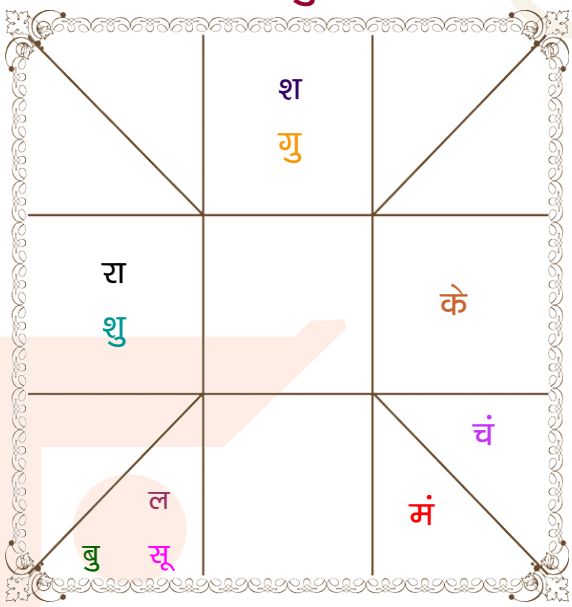

विंशोत्तरी
केतु 5वर्ष 2मा 26दि

केतु

18/09/1999

15/12/2117

केतु	13/12/2004
शुक्र	13/12/2024
सूर्य	14/12/2030
चन्द्र	13/12/2040
मंगल	14/12/2047
राहु	14/12/2065
गुरु	14/12/2081
शनि	14/12/2100
बुध	15/12/2117

योगिनी
उल्का 4वर्ष 5मा 27दि

भ्रामरी

15/03/2025

15/03/2029

भ्रामरी	25/08/2025
भद्रिका	16/03/2026
उल्का	14/11/2026
सिद्धा	25/08/2027
संकटा	15/07/2028
मंगला	24/08/2028
पिंगला	14/11/2028
धान्या	15/03/2029

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	21:19:07	330:38:59	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	---
सूर्य			कन्या	00:51:39	00:58:33	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	राहु	सम राशि
चंद्र			धनु	03:21:15	11:53:19	मूल	2	19	गुरु	केतु	सूर्य	सम राशि
मंगल			वृश्चि	15:59:58	00:39:55	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	स्वराशि
बुध		अ	कन्या	08:49:11	01:43:55	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	उच्च राशि
गुरु	व		मेष	10:11:37	00:04:38	अश्विनी	4	1	मंगल	केतु	शनि	मित्र राशि
शुक्र			कर्क	25:51:57	00:15:23	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	शत्रु राशि
शनि	व		मेष	23:00:48	00:01:59	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	शनि	नीच राशि
राहु			कर्क	18:13:31	00:00:15	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	बुध	शत्रु राशि
केतु			मक	18:13:31	00:00:15	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	शत्रु राशि
हर्ष	व		मक	19:30:20	00:01:36	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	---
नेप	व		मक	07:55:13	00:00:49	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
प्लूटो			वृश्चि	14:08:09	00:00:59	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	राहु	---
दशम भाव			मिथु	21:20:31	--	पुनर्वसु	--	7	बुध	गुरु	गुरु	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:50:58

लग्न-चलित

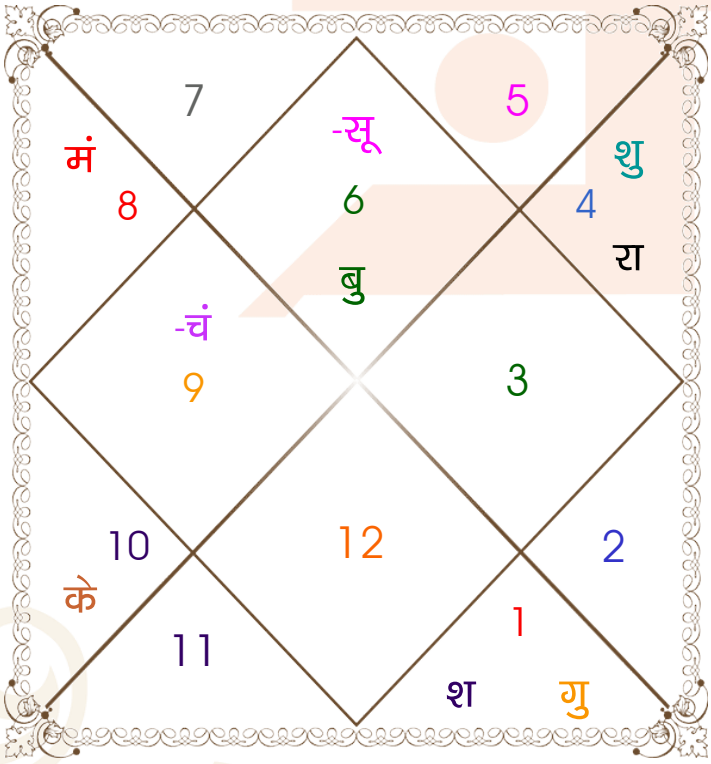

चन्द्र कुंडली

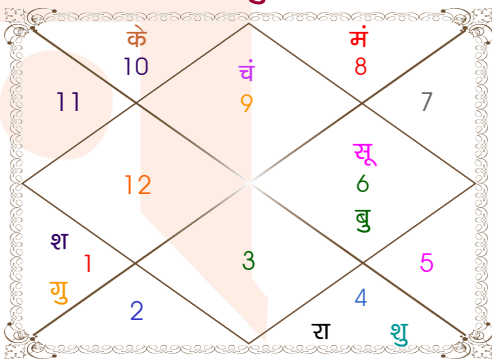

नवमांश कुंडली

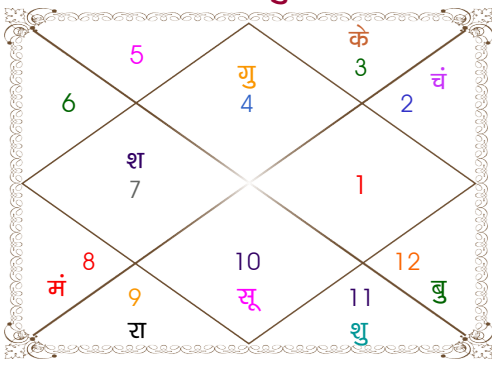

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कन्या	06:19:21	कन्या	21:19:07
2	तुला	06:19:21	तुला	21:19:35
3	वृश्चिक	06:19:49	वृश्चिक	21:20:03
4	धनु	06:20:17	धनु	21:20:31
5	मकर	06:20:17	मकर	21:20:03
6	कुम्भ	06:19:49	कुम्भ	21:19:35
7	मीन	06:19:21	मीन	21:19:07
8	मेष	06:19:21	मेष	21:19:35
9	वृष	06:19:49	वृष	21:20:03
10	मिथुन	06:20:17	मिथुन	21:20:31
11	कर्क	06:20:17	कर्क	21:20:03
12	सिंह	06:19:49	सिंह	21:19:35

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	21:19:07
2	तुला	20:26:49
3	वृश्चिक	20:36:46
4	धनु	21:20:31
5	मकर	22:28:39
6	कुम्भ	23:02:31
7	मीन	21:19:07
8	मेष	20:26:49
9	वृष	20:36:46
10	मिथुन	21:20:31
11	कर्क	22:28:39
12	सिंह	23:02:31

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

चलित कुंडली

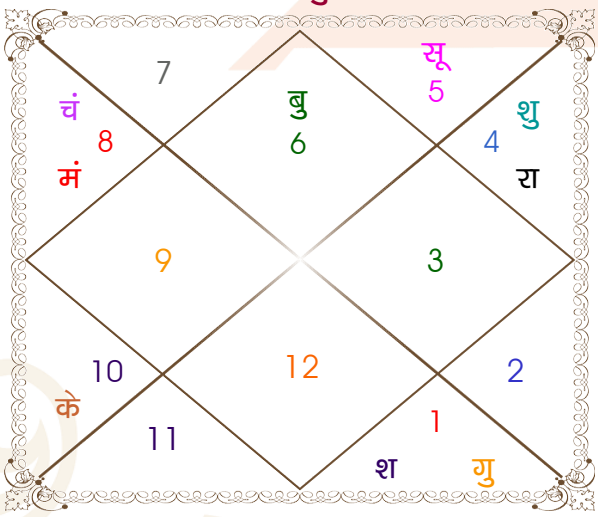

भाव कुंडली

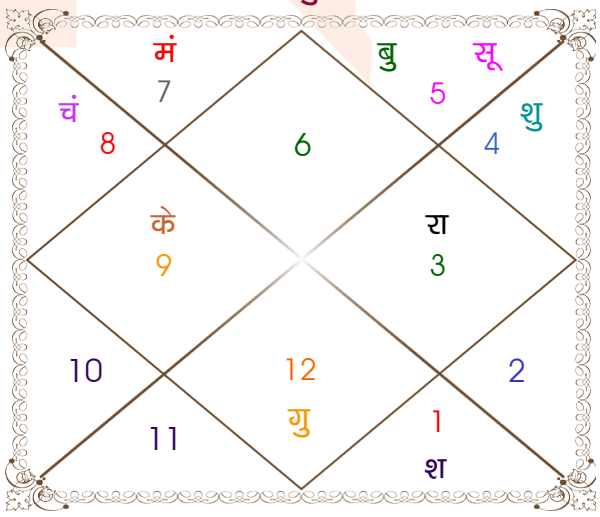

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 5 वर्ष 2 मास 26 दिन

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
18/09/1999		13/12/2004		13/12/2024		14/12/2030		13/12/2040	
13/12/2004		13/12/2024		14/12/2030		13/12/2040		14/12/2047	
	00/00/0000	शुक्र	14/04/2008	सूर्य	02/04/2025	चंद्र	14/10/2031	मंगल	12/05/2041
	18/09/1999	सूर्य	14/04/2009	चंद्र	02/10/2025	मंगल	14/05/2032	राहु	30/05/2042
सूर्य	17/11/1999	चंद्र	14/12/2010	मंगल	06/02/2026	राहु	13/11/2033	गुरु	06/05/2043
चंद्र	17/06/2000	मंगल	13/02/2012	राहु	01/01/2027	गुरु	15/03/2035	शनि	14/06/2044
मंगल	13/11/2000	राहु	13/02/2015	गुरु	20/10/2027	शनि	13/10/2036	बुध	11/06/2045
राहु	01/12/2001	गुरु	14/10/2017	शनि	01/10/2028	बुध	15/03/2038	केतु	07/11/2045
गुरु	07/11/2002	शनि	13/12/2020	बुध	08/08/2029	केतु	14/10/2038	शुक्र	07/01/2047
शनि	17/12/2003	बुध	14/10/2023	केतु	14/12/2029	शुक्र	14/06/2040	सूर्य	15/05/2047
बुध	13/12/2004	केतु	13/12/2024	शुक्र	14/12/2030	सूर्य	13/12/2040	चंद्र	14/12/2047

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
14/12/2047		14/12/2065		14/12/2081		14/12/2100		15/12/2117	
14/12/2065		14/12/2081		14/12/2100		15/12/2117		00/00/0000	
राहु	26/08/2050	गुरु	01/02/2068	शनि	16/12/2084	बुध	13/05/2103	केतु	13/05/2118
गुरु	19/01/2053	शनि	14/08/2070	बुध	27/08/2087	केतु	09/05/2104	शुक्र	13/07/2119
शनि	26/11/2055	बुध	19/11/2072	केतु	04/10/2088	शुक्र	10/03/2107	सूर्य	19/09/2119
बुध	14/06/2058	केतु	26/10/2073	शुक्र	05/12/2091	सूर्य	15/01/2108		00/00/0000
केतु	03/07/2059	शुक्र	26/06/2076	सूर्य	16/11/2092	चंद्र	15/06/2109		00/00/0000
शुक्र	03/07/2062	सूर्य	14/04/2077	चंद्र	17/06/2094	मंगल	12/06/2110		00/00/0000
सूर्य	27/05/2063	चंद्र	14/08/2078	मंगल	27/07/2095	राहु	30/12/2112		00/00/0000
चंद्र	25/11/2064	मंगल	21/07/2079	राहु	02/06/2098	गुरु	06/04/2115		00/00/0000
मंगल	14/12/2065	राहु	14/12/2081	गुरु	14/12/2100	शनि	15/12/2117		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 5 वर्ष 2 मा 24 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
02/04/2025		02/10/2025		06/02/2026		01/01/2027		20/10/2027	
02/10/2025		06/02/2026		01/01/2027		20/10/2027		01/10/2028	
चंद्र	17/04/2025	मंगल	09/10/2025	राहु	28/03/2026	गुरु	09/02/2027	शनि	14/12/2027
मंगल	28/04/2025	राहु	28/10/2025	गुरु	11/05/2026	शनि	27/03/2027	बुध	01/02/2028
राहु	25/05/2025	गुरु	14/11/2025	शनि	02/07/2026	बुध	08/05/2027	केतु	22/02/2028
गुरु	19/06/2025	शनि	04/12/2025	बुध	17/08/2026	केतु	25/05/2027	शुक्र	20/04/2028
शनि	17/07/2025	बुध	23/12/2025	केतु	05/09/2026	शुक्र	12/07/2027	सूर्य	07/05/2028
बुध	12/08/2025	केतु	30/12/2025	शुक्र	30/10/2026	सूर्य	27/07/2027	चंद्र	05/06/2028
केतु	23/08/2025	शुक्र	20/01/2026	सूर्य	16/11/2026	चंद्र	20/08/2027	मंगल	25/06/2028
शुक्र	22/09/2025	सूर्य	27/01/2026	चंद्र	13/12/2026	मंगल	07/09/2027	राहु	16/08/2028
सूर्य	02/10/2025	चंद्र	06/02/2026	मंगल	01/01/2027	राहु	20/10/2027	गुरु	01/10/2028

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
01/10/2028		08/08/2029		14/12/2029		14/12/2030		14/10/2031	
08/08/2029		14/12/2029		14/12/2030		14/10/2031		14/05/2032	
बुध	14/11/2028	केतु	15/08/2029	शुक्र	12/02/2030	चंद्र	08/01/2031	मंगल	27/10/2031
केतु	02/12/2028	शुक्र	06/09/2029	सूर्य	03/03/2030	मंगल	26/01/2031	राहु	28/11/2031
शुक्र	23/01/2029	सूर्य	12/09/2029	चंद्र	02/04/2030	राहु	13/03/2031	गुरु	26/12/2031
सूर्य	08/02/2029	चंद्र	23/09/2029	मंगल	24/04/2030	गुरु	22/04/2031	शनि	29/01/2032
चंद्र	06/03/2029	मंगल	30/09/2029	राहु	17/06/2030	शनि	09/06/2031	बुध	28/02/2032
मंगल	24/03/2029	राहु	19/10/2029	गुरु	05/08/2030	बुध	23/07/2031	केतु	11/03/2032
राहु	09/05/2029	गुरु	05/11/2029	शनि	02/10/2030	केतु	09/08/2031	शुक्र	16/04/2032
गुरु	20/06/2029	शनि	26/11/2029	बुध	23/11/2030	शुक्र	29/09/2031	सूर्य	27/04/2032
शनि	08/08/2029	बुध	14/12/2029	केतु	14/12/2030	सूर्य	14/10/2031	चंद्र	14/05/2032

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
14/05/2032		13/11/2033		15/03/2035		13/10/2036		15/03/2038	
13/11/2033		15/03/2035		13/10/2036		15/03/2038		14/10/2038	
राहु	04/08/2032	गुरु	17/01/2034	शनि	15/06/2035	बुध	26/12/2036	केतु	27/03/2038
गुरु	17/10/2032	शनि	04/04/2034	बुध	05/09/2035	केतु	25/01/2037	शुक्र	02/05/2038
शनि	11/01/2033	बुध	12/06/2034	केतु	08/10/2035	शुक्र	21/04/2037	सूर्य	13/05/2038
बुध	30/03/2033	केतु	11/07/2034	शुक्र	13/01/2036	सूर्य	17/05/2037	चंद्र	30/05/2038
केतु	01/05/2033	शुक्र	30/09/2034	सूर्य	11/02/2036	चंद्र	29/06/2037	मंगल	12/06/2038
शुक्र	31/07/2033	सूर्य	24/10/2034	चंद्र	30/03/2036	मंगल	29/07/2037	राहु	14/07/2038
सूर्य	28/08/2033	चंद्र	04/12/2034	मंगल	03/05/2036	राहु	15/10/2037	गुरु	11/08/2038
चंद्र	12/10/2033	मंगल	01/01/2035	राहु	28/07/2036	गुरु	23/12/2037	शनि	14/09/2038
मंगल	13/11/2033	राहु	15/03/2035	गुरु	13/10/2036	शनि	15/03/2038	बुध	14/10/2038

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	9
भाग्यांक	1
मित्र अंक	1, 3, 6, 9
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	91%	धनार्जन, भाग्योदय, धन
मोती	चंद्र	72%	सुख, धनार्जन
गोमेद	राहु	66%	धनार्जन, सुख
लहसुनिया	केतु	41%	सन्तति कष्ट, दुर्घटना
माणिक्य	सूर्य	31%	रोग, व्यय
नीलम	शनि	25%	दुर्घटना, सन्तति कष्ट, शत्रु व रोग
पुखराज	गुरु	9%	दुर्घटना, ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट
मूंगा	मंगल	0%	पराक्रम हानि, दुर्घटना

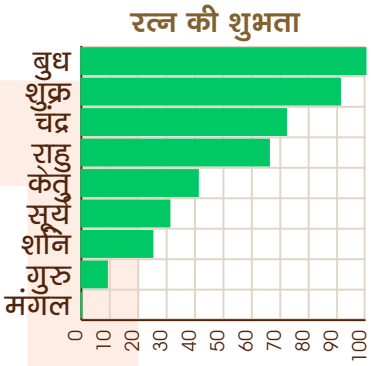

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	13/12/2004	6%	59%	2%	100%	9%	97%	0%	53%	58%
शुक्र	13/12/2024	6%	59%	0%	100%	9%	100%	38%	72%	52%
सूर्य	14/12/2030	53%	78%	2%	100%	22%	78%	0%	53%	16%
चंद्र	13/12/2040	44%	84%	0%	100%	9%	91%	25%	53%	16%
मंगल	14/12/2047	44%	78%	15%	100%	22%	91%	25%	53%	52%
राहु	14/12/2065	6%	59%	0%	100%	9%	97%	38%	78%	16%
गुरु	14/12/2081	44%	78%	2%	100%	34%	78%	25%	66%	41%
शनि	14/12/2100	6%	59%	0%	100%	9%	97%	50%	72%	16%
बुध	15/12/2117	44%	59%	0%	100%	9%	97%	25%	66%	41%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढेसाती प्रथम ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढेसाती द्वितीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	अल्प बचत
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	पराक्रम हानि
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	सुख
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	सन्तति सुख
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्मकाल में मंगल की स्थिति चन्द्रकुंडली में द्वादश भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि चन्द्र से मांगलिक होने का दोष अधिक प्रबल नहीं होता। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृति किंचित व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आप समय समय पर व्यय करते रहेंगे। जिससे आपको अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन इसका प्रभाव अल्प रहेगा। तथा सामान्य रूप से धनार्जन होता रहेगा। शारीरिक स्वास्थ्य आपका मध्यम रहेगा। मानसिक परेशानी की अनुभूति आपको समय समय पर होती रहेगी। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी उत्पन्न होंगे लेकिन उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब हो सकता है परन्तु इस कार्य में सफलता आपको अवश्य प्राप्त होगा। साथ ही विवाह पूर्व किसी वार्ता में गतिरोध भी उत्पन्न हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। विवाह के पश्चात आपका दाम्पत्य जीवन परस्पर सामंजस्य के कारण अनुकूल रहेगा तथा इसका उचित उपभोग करने में आप समर्थ रहेंगे।

चन्द्रकुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील होगी परन्तु प्रचुर मात्रा में धनार्जन होने के कारण इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों तथा समस्याओं का सामना तथा समाधान करने में भी आप सफल होंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से भाई बहनों का सुख मध्यम रहेगा। पराक्रम तथा आत्मबल में वृद्धि होगी जिससे आपके लाभ एवं उन्नति के मार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। षष्ठ

भावस्थ मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने में आपको सफलता मिलेगी। यदा कदा पित या गर्मी द्वारा उत्पन्न रोगों से आपको परेशानी का सामना करना पड़ेगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन परस्पर सामंजस्य के कारण आप सुखी दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे परस्पर मांगलिक दोष का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु सदृश पाप ग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक आप अपने दाम्पत्य जीवन का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग भी प्रदान करेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव में केतु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- पंचम् भाव का स्वामी नीच का होकर अष्टम् भाव में स्थित है।
- पंचम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में शुक्र, शनि और केतु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें।

बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में केतु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ काले कुत्ते को मीठी रोटी खिलाएं। रंगबिरंगी चिड़ियों को दाना डालें। नारियल का दान करें या जल प्रवाह करें। ब्राह्मणों की सेवा कर आशीर्वाद प्राप्त करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

लग्न (प्रथम) में सूर्य हो तो जातक स्वाभिमानी, चंचल, कृशदेही, प्रवासी उन्नत नासिका, विशाल ललाटवाला, पित्त-वातरोगी, शूरवीर, अस्थिर सम्पत्तिवाला एवं अल्पकेशी होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रुग्नता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

चन्द्र

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में होने से माता का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके प्रति उनका प्रगाढ़ स्नेह रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार की सुख सुविधाएं तथा अन्य सुखों को वे आपको प्रदान करेंगी। आपके मध्य मतभेद अल्प ही रहेंगे अतः परस्पर संबंध मधुर रहेंगे। साथ ही वाहनादि की प्राप्ति में भी वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा कभी भी कोई कठिनाई का सामना नहीं करने देंगी।

आप भी उनका हमेशा हार्दि सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा एवं निर्देशों को मानने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही अपने जीवन काल में उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे तथा आवश्यक सुखसुविधाओं को भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध मधुर एवं सुदृढ रहेंगे तथा जीवन को प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

मंगल

तृतीयभाव में मंगल हो तो जातक कटुभाष, भ्रतृकष्टकारक, प्रदीप्त जठराग्निवाला, बलवान्, बन्धुहीन, सर्वगुणी, साहसी, धैर्यवान् प्रसिद्ध एवं शूरवीर होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। शक्ति, साहस तथा पराक्रम से वे युक्त रहेंगे। साथ ही जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। धन धान्य से भी वे युक्त रहेंगे एवं समयानुसार आपकी आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में आपकी पूरी सहायता करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी एवं सर्वदा विषम परिस्थितियों में भी उनका पूर्ण सहयोग करेंगे। आप के परस्पर संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा मतवैमिन्यता के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु वह अल्प समय के लिए रहेगा कुछ समय बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप भाई बहिनों के सुख मध्यम रूप से ही अर्जित कर सकेंगे।

बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उस्वभाव, धनी, विद्वान, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, क्रूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- सूर्य
(13/12/2024 - 14/12/2030)

सूर्य की महादशा 13/12/2024 को आरंभ और 14/12/2030 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य लग्न में स्थित है। सूर्य स्वास्थ्य, पिता, आत्मा, राजकीय सम्मान का प्रतिनिधित्व करता है जबकि प्रथम भाव चरित्र, स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और सुख का द्योतक है। अतः इस दशा में आपका स्वास्थ्य, सम्पत्ति, शक्ति तथा प्रभुत्व उत्तम होंगे।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य इस दशा में उत्तम रहेगा। किन्तु, शरीर में अत्यधिक ताप होने के कारण आप खसरा आदि संक्रामक रोगों के शिकार हो सकते हैं। अन्यथा आप हृष्टपुष्ट और शक्तिशाली रहेंगे।

सम्पत्ति :

इस अवधि में आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी और आप धनी तथा समृद्धिशाली होंगे। आप अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करेंगे और अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आप धन तथा जीवन के सारे सुखों से सम्पन्न होंगे। आपको आपके पिता से लाभ हो सकता है।

व्यवसाय :

आप इस दशा में यश और ख्याति प्राप्त करेंगे। आप अपने कार्यों में सफल होंगे और डच्चाधिकारिओं का अनुग्रह प्राप्त करेंगे। नौकरीपेशा लोगों के कार्य में परिवर्तन हो सकता है। आपको कुछ अप्रत्याशित लाभ हो सकता है या आपका स्थानान्तरण अथवा कार्य-स्थान में परिवर्तन हो सकता है। आप प्रशासनिक कार्यों, व्यापार अथवा सरकारी कार्यों में बहुत अच्छा कर सकते हैं। आपमें प्रशासकीय योग्यता तथा अथक परिश्रम की क्षमता है। आप चिकित्सा तथा लेखा, कोषागार आदि से संबन्धित कार्यों का सुन्दर संचालन कर सकते हैं। आप बड़ी संस्थाओं, निगमों आदि के प्रबंधक, निदेशक, विक्रय-प्रबंधक आदि के लिए अत्यन्त योग्य हैं। सोने, तांबे तथा रत्नों का व्यवसाय आपके लिये उपयुक्त है।

परिवार (कुटुम्ब) :

आपको आपकी सन्तानों से सुख मिलेगा। आपके परिवार में किसी शिशु का जन्म हो सकता है। दाम्पत्य जीवन में कुछ तनाव हो सकते हैं जिन पर धैर्य तथा सहिष्णुता से नियंत्रण किया जा सकता है। आपकी माता प्रभावशाली होंगी और उन्हें सट्टे तथा निवेश से लाभ का सुअवसर मिलेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को आर्थिक लाभ होगा जबकि बड़ों को कठिन परिश्रम करना होगा। किन्तु उन्हें शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी तथा वे संवादपटुता आदि से लाभ प्राप्त करने में सफल होंगे।

शिक्षा :

आपकी योग में रुचि रहेगी और आप धार्मिक प्रवचन करेंगे या उनकी व्यवस्था करेंगे। आपकी राजनीति में रुचि हो सकती है। आप में विभिन्न सामाजिक व राजनीतिक कार्यों के आयोजन की अद्‌भुत क्षमता है। आपके उग्र स्वभाव के कारण आपकी अन्यों के साथ शत्रुता हो सकती है, हालाँकि आप दयालु-हृदय हैं।

अंर्तदशा :- सूर्य - सूर्य
(13/12/2024 - 02/04/2025)

आपके लिए सूर्य की महादशा 13/12/2024 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 02/04/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप प्रभावशाली, सक्रिय और उद्यमी होंगे। आप महत्वाकांक्षी हैं और सत्ता से अनुराग रखते हैं। इस अंतर्दशा में आप अपने उद्देश्यों को पूर्ण करने में सफल होंगे और नाम भी खूब कमाएंगे। नेतृत्व शक्ति के कारण आपका सम्मान होगा। न्यायप्रिय होने के कारण आप प्रशंसा प्राप्त करने योग्य कार्य करेंगे जिनसे आपके व्यक्तित्व का विकास होगा। प्रसन्नचित रहने और आशावादी दृष्टिकोण के कारण आपकी लोकप्रियता में वृद्धि होगी।

पिता के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे। उनकी जायदाद में वृद्धि होगी। माता की लोकप्रियता बढ़ेगी और उन्हें सब कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। आपके भाई-बहनों के धन में वृद्धि होगी। आपकी संतान शिक्षा में यश प्राप्त करेगी। सूर्य की सप्तम भाव पर दृष्टि के कारण दांपत्य जीवन में कुछ मतभेद संभव हैं मगर इनका समाधान धैर्य और सहनशीलता द्वारा हो सकता है। भागीदारों के साथ भी कुछ मतभेद पनप सकते हैं। राजनीति में भाग लेने वालों के लिए समय उत्तम है।

इस अंतर्दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पित्तविकार, सिरदर्द और कार्यक्षमता में कमी आदि से कष्ट संभव है। इन सब से बचने के लिए गायत्री मंत्र का जाप लाभदायक रहेगा।

अंर्तदशा :- सूर्य - चन्द्र
(02/04/2025 - 02/10/2025)

आपकी सूर्य की महादशा 13/12/2024 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 02/10/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आप धन, जायदाद, वाहन आदि प्राप्त करेंगे। आप धन-धान्य से पूर्ण होकर प्रसन्न रहेंगे। आपके फैसलों पर आपकी माता का प्रभाव पड़ेगा। आप सुख-शांति और सब सुविधाओं से युक्त रहेंगे। वाहन की प्राप्ति संभावित है। आप मकान का निर्माण या वर्तमान मकान का नवीनीकरण करेंगे। जायदाद संबंधी गतिविधियां अधिक रहेंगी।

आपकी संतान शिक्षा में प्रगति करेगी। जीवनसाथी के व्यवसाय में बदलाव आ सकता है। सेवारत जातकों को लाभ होगा, मगर उतार-चढ़ाव होते रहेंगे। आपके विरोधी अधिक हानि नहीं पहुंचा सकेंगे। आपके पिता के भाग्य में अचानक परिवर्तन हो सकता है। आपका निवास खुशियों और शांति से भरपूर रहेगा। आपकी रुचि बागबानी में हो सकती है।

स्वास्थ्य आपका उत्तम रहेगा मगर खांसी से बचने के लिए एलर्जी वाले पदार्थों से दूर रहें। शुभत्व में वृद्धि के लिए सोमवार के दिन व्रत रखें और सफेद वस्तुओं का दान दें।

अंर्तदशा :- सूर्य - मंगल
(02/10/2025 - 06/02/2026)

आपकी सूर्य की महादशा 13/12/2024 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 06/02/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपकी रुचि खेलकूद और जोखिमभरे कामों में रहेगी। कला, विज्ञान और तकनीकी विषयों में मन लगेगा। बीमारियों के विरुद्ध प्रतिरोधक शक्ति प्रबल रहेगी। शत्रु और प्रतिद्वंद्वी परास्त होंगे। सेवारत व्यक्तियों की प्रशासनिक क्षमता चमकेगी। परामर्शदाताओं के लिए समय प्रतिद्वंद्विता का रहेगा। उद्यमियों को परिश्रम द्वारा लाभ मिलेगा। जायदाद की खरीद-बिक्री से बचें। सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है, मगर जल्दबाजी में काम न करें।

माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। उनके माध्यम से अप्रत्याशित खर्च हो सकता है। आपके पिता के भागीदारों से संबंध तनावपूर्ण हो सकते हैं। आप किसी दूरस्थ स्थान की यात्रा पर जा सकते हैं। आपकी संतान शिक्षा में सफल रहेगी और विभिन्न गतिविधियों में भाग लेगी। आपके भाई-बहनों को वर्तमान स्तर बनाये रखने के लिए परिश्रम करना होगा।

आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। मामूली ज्वर, गले की खराश, खरौंच आदि हो सकते हैं। शुभत्व की वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - राहु
(06/02/2026 - 01/01/2027)

आपके लिए सूर्य की महादशा 13/12/2024 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 06/02/2026 को प्रारंभ होकर 01/01/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में आपको आकांक्षाओं की पूर्ति में विभिन्न व्यक्तियों से सहायता प्राप्त होगी। विदेश के संपर्कों से लाभ होगा। आपको धन, सुख-सुविधाएं और आराम नसीब होंगे। शिशु का जन्म हो सकता है। उच्चाधिकारियों से सम्मान मिलेगा।

जीवनसाथी को धन मिलेगा। आपके पिता को सफलता प्राप्त करने के लिए कर्मठता से प्रयास करने होंगे। माता को स्वास्थ्य पर पूरा ध्यान देना चाहिए। भाई-बहन सौभाग्यशाली रहेंगे। उन्हें प्रसिद्धि प्राप्त होगी। उनका विवाह हो सकता है। आपकी संतान को प्रसिद्धि मिलेगी। संपर्क बढ़ाने के लिए समय उनके लिए उत्तम है।

अगर आप सेवारत हैं तो मातहत सहयोग करेंगे, सब कुछ ठीक ढंग से चलेगा।

परामर्शदाताओं के जमा धन में वृद्धि होगी। व्यापारियों की व्यस्तता बढ़ेगी।

शरीर के निचले भागों और बायें कान की देखभाल करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए नीले वस्त्र और सतनजे का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - गुरु
(01/01/2027 - 20/10/2027)

आपके लिए सूर्य की महादशा 13/12/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 01/01/2027 को प्रारंभ होकर 20/10/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आपको विरासत या किसी वसीयत आदि से लाभ हो सकता है। शुभग्रह बृहस्पति आपको धन, सौभाग्य प्रदान करेंगे। प्राच्य विद्या आदि में रुचि हो सकती है। धन प्राप्त होगा। अध्यात्म में रुचि होगी, धार्मिक स्थल की यात्रा संभव है। दान-धर्म में भाग लेंगे। वाहन द्वारा लाभ होगा। माता के साथ संबंध मधुर होंगे।

आपके जीवनसाथी को नाम, प्रसिद्धि, शत्रुओं पर विजय, यात्राएं, धन में वृद्धि संभावित हैं। आपके पिता की लंबी यात्रा हो सकती है, खर्चे बढ़ेंगे, अचल संपत्ति में बढ़ोत्तरी और अध्यात्म में रुचि की संभावना है। भाई-बहनों को मातहतों से लाभ होगा, स्पर्धा में विजय मिलेगी, धन प्राप्त होगा। माता को निवेश में लाभ, सुख-समृद्धि प्राप्त होंगे। आपकी संतान भविष्य के लिए सुदृढ़ नींव रखेगी। उन्हें धन मिलेगा, लंबी यात्राएं होंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो वांछित परिणाम पाने के लिए कठोर परिश्रम करना होगा। वेतन बढ़ सकता है। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों के संपर्क बढ़ेंगे, अनुबंधों पर हस्ताक्षर हो सकते हैं।

बदहज़मी, मधुमेह, जिगर-तिल्ली की बीमारी, श्वसनतंत्र के रोगों से बचें। कष्टों से बचाव के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें और पीली वस्तुओं का दान करें।

ॐ बृं वृहस्पतये नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - शनि
(20/10/2027 - 01/10/2028)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 20/10/2027 को प्रारंभ होगी और 01/10/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपको धन मिलेगा। पारिवारिक जीवन में स्थायित्व आएगा। अचल संपत्ति पर्याप्त होगी। परिवार में शांति बनाये रखने के लिए प्रयास करना होना। निवेश से लाभ होगा। कार्य-व्यवसाय में बाधाएं आ सकती हैं। प्राच्यविद्या में रुचि रहेगी।

जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी। पिता को स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। उनकी लंबी यात्राएं हो सकती हैं। माता को निवेश से लाभ हो सकता है। छोटे भाई-बहन बाधाओं पर विजय प्राप्त करेंगे। बड़े भाई-बहनों को लाभ होगा। आपकी संतान की नींव मजबूत होगी; उन्हें लक्ष्यप्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सबका सहयोग प्राप्त होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों को गठबंधन और अनुबंधों से लाभ हो सकता है।

बीमार होने से सावधान रहें। शनि यदि जन्मपत्रिका में शुभ है तो हानि कम होगी। नेत्र के और वात से संबंधित रोग हो सकते हैं। अरिष्ट से बचने के लिए शनि की पूजा करें और तिल, काले वस्त्र, काले जूते, लोहे का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - बुध
(01/10/2028 - 08/08/2029)

आपकी सूर्य की महादशा 13/12/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 01/10/2028 को प्रारंभ होकर 08/08/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चपद और अधिकार प्राप्त करेंगे। जीवनसाथी से सुख और आराम की प्राप्ति होगी। जमीन, जायदाद और पिता से लाभ मिलेगा। मामा पक्ष के लोग धनधान्य से परिपूर्ण होंगे। माता से आपको लाभ प्राप्त होगा। व्यापार या सट्टेबाजी से अच्छी आय संभव है। जीवनसाथी या साझेदार का साथ विचार विनिमय सकारात्मक रहेगा। लेखकों और विचारकों के लिए यह समय शुभ रहेगा। जीवन साथी को व्यवसाय, लेखन, पत्रलेखन से अच्छी आय हो सकती है। साझेदार को लाभ होगा।

आपके पिता को सट्टेबाजी या निवेश से धन मिलेगा। उन्हें संतान से सुख मिलेगा और उच्चपद मिल सकता है। माता को कार्यों में सफलता, धन का लाभ और शत्रुओं पर विजय संभावित हैं।

छोटे भाई-बहनों को धन मिलेगा, बड़ों की लघु यात्राएं हो सकती हैं। संतान को उच्चशिक्षा के अवसर प्राप्त होंगे और वर्तमान शिक्षा में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी। जीवनस्तर पहले जैसा रहेगा। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। स्नायविक थकान से सावधान रहें। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - केतु
(08/08/2029 - 14/12/2029)

आपके लिए सूर्य की महादशा 13/12/2024 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 08/08/2029 को आरंभ होकर 14/12/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

इस अवधि में आप भाग्यशाली और प्रसन्न रहेंगे। आपकी सामान्य स्थान और धर्मस्थलों की यात्राएं होंगी। तंत्र-मंत्र में दिलचस्पी बढ़ेगी। निवेश सोच-समझकर करें, अन्यथा नुकसान हो सकता है। संतान के कारण कुछ समस्या आ सकती है। आपको धैर्य और नीति का प्रयोग करना होगा। आपको सफलता, प्रोन्नति और भूमि प्राप्ति का संकेत है। सुख-सुविधाएं रहेंगी।

आपके जीवनसाथी को धनलाभ होगा। पिता को संतान से खुशी मिलेगी; धन और अध्यात्मिक प्रगति का योग है। माता को धन मिलेगा। आपकी संतान की व्यस्तता बढ़ेगीः उन्हें लक्ष्यप्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो तनाव हो सकता है; शत्रुओं पर विजय होगी, कुछ चिंताएं रहेंगी। परामर्शदाताओं के कार्यक्षेत्र में कुछ परिवर्तन हो सकता है। व्यापारियों को निवेश से लाभ हो सकता है।

उदर और हृदय के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए धर्मस्थल पर कंबल दान दें और श्वान को भोजन दें।

अंर्तदशा :- सूर्य - शुक्र
(14/12/2029 - 14/12/2030)

सूर्य महादशा में शुक्र अंतर्दशा होगी।

इस अवधि में आप सफल होंगे। आपकी सभी आकांक्षाओं और इच्छाओं की पूर्ति होगी। संतान से सुख मिलेगा। संतान का जन्म भी हो सकता है। स्त्रियों से संबंधित कार्य बहुत लाभकारी रहेगा। बड़े भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। कला में रुचि होगी। अपनी किस्मत का आभास आपको रहता है।

आपके जीवनसाथी को निवेश, संतान, कला आदि से लाभ होगा। पिता की लघु यात्राएं होंगी, पड़ौसियों से मधुर संबंध रहेंगे। माता को अप्रत्याशित धन मिल सकता है। भाई-बहनों का समय भाग्यशाली रहेगा; उनकी यात्राएं होंगी, ज्ञानार्जन होगा। आपकी संतान को सहयोगियों से लाभ मिलेगा; वे सुर्खियों में रहेंगे, सब सुख नसीब होंगे, उच्चपद मिल सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो विरोधियों पर विजय होगी, कार्यालय की स्थिति उत्तम

होगी। परामर्शदाताओं को लाभ होगा। व्यापारी भी अधिक धन कमाएंगे।

कान, पैर और श्वसन तंत्र के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मी जी की आराधना करें।